कैकेयी

मूल मराठी कृति

जनार्दन ओक

अनुवाद

समृद्धि पटवर्धन

कैकेयी

मूल मराठी कृति

श्री जनार्दन ओक

अनुवादक

समृद्धि पटवर्धन

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2023

ISBN: 978-93-92465-11-6

© *समृद्धि पटवर्धन*

समर्पण

उस माँ के

चरणों में जिसने ''भाषा'' के प्रति

प्रेम के बीज बोए

समृद्धि

आशीर्वाद

कभी 'कैकेयी' का हिन्दी में अनुवाद होगा और वह हिन्दी भाषियों तक पहुँचेगा, यह मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था। पर यह सम्भव हुआ। कुछ अनपेक्षित रूप से।

एक भाषा का साहित्य किसी दूसरी भाषा में अनुवादित करना कोई सहज सरल कार्य नहीं। किंबहुना, यह एक अत्यन्त कठिन कार्य है क्योंकि मूल कृति का सौन्दर्य अखंडित रखते हुए उसे दूसरी भाषा में परावर्तित करने के लिए दोनों भाषाओं का ज्ञान आवश्यक है। केवल इतना ही नहीं तो उचित शब्दों के प्रयोग हेतु शब्द भंडार भी आवश्यक है। अन्यथा शब्दों का अभिप्रेत अर्थ व्यक्त नहीं हो पाता।

परन्तु यह कठिन कार्य समृद्धि ने अत्यन्त कुशलता से कर दिखाया है। हिन्दी भाषा के उचित शब्दों का प्रयोग कर मराठी भाषा के सौन्दर्य - स्थलों का सौन्दर्य अबाधित रखा है। उसके इस प्रयास के होते हुए भी द्वितीय रूप के लिए हार्दिक अभिनंदन। 'कैकेयी' का यह दूसरा संस्करण हिन्दी-भाषी पाठकों तक पहुँचाने का कार्य उसने कुशलतापूर्वक किया है।

समृद्धि निरंतर सृजन और चिन्तन करती रहे, यही कामना है। उसकी लगन और कुशलता इस विश्वास को प्रतिफलित करती है कि उसकी दृष्टि व्यापक है। उसके उत्तरोत्तर उज्ज्वल भविष्य के लिये ईश्वर के चरणों में प्रार्थना है।

जनार्दन ओक

मुम्बई

(मूल लेखक)

शब्द आरती

रामायण और महाभारत के कथानकों तथा पात्रों के आलम्बन से देश - विदेश की विभिन्न भाषाओं में अनेक कृतियों का प्रणयन हुआ है - गद्य की अपेक्षा काव्य ग्रंथों की मात्रा प्रचुर है। इनमें भी उन रचनाओं ने अधिक ध्यान आकृष्ट किया है जिनके केन्द्र में उपेक्षित तिरस्कृत अथवा निन्दनीय पात्र हैं।

विहंगम दृष्टि से रामकथा में विशेष रूप से वाल्मीकि कृत रामायण तथा गोस्वामी तुलसीदास रचित श्री रामचरित मानस में ''कैकेयी'' का खलनायिका स्वरूप अधिक उभरा लगता है।

मराठी के सिद्ध प्रसिद्ध रचनाकार श्री जनार्दन ओक, मुंबई ने कैकेयी संदर्भित बिखरे जीवन सूत्रों, कथांशों को, सुविचारित सुनियोजित ढंग से गुम्फित कर श्रेष्ठ उपन्यास का सृजन किया है।

आत्मकथात्मक शैली में रचित उपन्यास ''कैकेयी'' का हिन्दी रूपान्तर (अनुवाद) किया है मध्यप्रदेश की संस्कारधानी जबलपुर की प्रतिभाशालिनी समृद्धि पाठक (पटवर्धन) ने।

बीसवीं शताब्दी के प्रथम पच्चीस वर्षों में अंग्रेजी तथा प्रान्तीय भाषाओं (मराठी, बंगला, गुजराती आदि) के उपयोगी व श्रेष्ठ ग्रंथ हिन्दी में अनूदित हुए। तब से अब तक यह अनुवाद धारा प्रवाहमान है। दरअसल, अनुवाद साहित्य की समृद्धि

का सबल माध्यम है, बशर्ते मूल कृति श्रेष्ठ हो और अनुवादक संवेदनशील व भाव दृष्टि संपन्न हो। भाषायी ज्ञान और शब्द संपदा का होना तो अनिवार्य है ही।

'कैकेयी' पर चर्चा के पूर्व उचित होगा पीठिका का निर्माण।

तुलसी ने 'मानस' में लिखा है:

''राम कथा कै मिति जग नाहीं।''

और

''नाना भांति राम अवतारा।

रामायण शत कोटि अपारा॥''

ज्ञान वारिधि स्वामी करपात्री जी ने अपेन वृहद ग्रंथ 'रामायण-मीमांसा' में व्यक्त किया है कि ''शत कोटि की मान्यता तुलसी द्वारा स्थापित नहीं, वरन वह पुराणों द्वारा स्थापित है''-

''चरितं रघुनाथस्य शत कोटि प्रविस्तरम्।''

कैकेयी रामकथा की प्रमुख घटक है। कल्पना करें कैकेयी विहीन रामकथा की। क्या विराट खालीपन, रिक्तता, शून्यता का अनुभव नहीं होगा? क्या रामकथा को गति और विस्तार देने, उसे रहस्य और उपलब्धि पूरित बनाने की एकमात्र श्रेयाधिकारिणी कैकेयी नहीं है ?

कैकेयी कैकयराज की सुपुत्री और अयोध्या के महाराजा दशरथ की छोटी रानी थीं। वे अप्रतिम सुन्दरी, पतिव्रता, विदुषी और वीरांगना थीं। दशरथ और